# राजपूत कालीन संगीत

**डा० अनीता कश्यप**
*एसोसिएट प्रोफेसर*
*रघुनाथ गर्ल्स कॉलेज, मेरठ*

***सारांश***

*राजपूत अपने राज्य को राष्ट्र समझने लगे। परिणाम स्वरूप देश के राजनैतिक, सामाजिक व सास्कश्षतिक क्षेत्र को हानि पहुँची। इनकी सकीर्ण मनोवषति का प्रभाव इनके आश्रय में रह रहे संगीतज्ञों पर भी पड़ा। वह अपने ज्ञान को अपने तक ही सीमित रखने लगे और इसी भावना में 'घराना' को जन्म दिया तथा संगीत घरानों में कैद हो गया। राजाओं के समान संगीतज्ञों राजाओं और सामन्तों के आश्रय में चले गये। तथापि राजा और प्रज्ञा दोनों में संगीत पूर्ण रूप में व्याप्त था।*

***महत्वपूर्ण शब्द***

1. *घराना*
2. *प्रतिहार*
3. *आश्रय दाता*
4. *सामन्त शाही*
5. *जौहर*

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

**डा० अनीता कश्यप,**

*''राजपूत कालीन संगीत''*

शोध मंथन,
सितम्बर 2017,
पेज सं0 204–205
http://anubooks.com/?page_id=581
Artcile No. 29

छठी शताब्दी के पश्चात् भारत में राजपूतों का आकस्मिक अभ्युदय हुआ। विदेशी आक्रमणों से भारत की रक्षा के लिये इनका प्रादुर्भाव हुआ और इन्होंने बहुत वीरता के साथ भारत के प्रहरी का कार्य किया इनमें से कुछ लोग प्रतिहार कहलाये। यह अपने आपको अग्नि कुल का वशंज कहती थी। कुछ लोगों का मत है कि इस राजपूत जाति का जन्म अग्नि से हुआ सम्भवतः जब विदेशियों का भारत में आगमन हुआ तब देश की रक्षा के लिये अग्नि के समक्ष इन्होंने शपथ ली होगी। अतः राजपूत जाति का जन्म अग्नि से माना जाने लगा धीरे धीरे उत्तरी भारत में इनकी राजनीतिक सत्ता कायम हो गयी जो अगले पाँच सौ वर्षों तक बनी रही। राजपूत देश के प्रहरी के रूप में कार्य करते रहे। कलान्तर में यह आपस में लड़ने झगड़ने लगे और अपने राज्य को राष्ट्र समझने लगे परिणाम स्वरूप देश के राजनैतिक सामाजिक व सांस्कृतिक क्षेत्र को हानि पहुँची। जहाँ एक ओर आपसी प्रेम भावना समाप्त होती जा रही थी। राजपूत आपसी वेमनसय और अंहकार के वशीभूत युद्ध में व्यस्त रहते थे। यह अपने राज्य को ही सब कुछ समझते थे। शांति के समय राग रंग, संगीत कला साहित्य में व्यस्त रहते थे। इनकी सकीर्ण मनोवृति का प्रभाव इनके आश्रय में रह रहे संगीतज्ञों पर भी बड़ा वह अपने ज्ञान को अपने तक ही सीमित रखने लगे और इसी भावना ने ''घराना'' को जन्म दिया तथा संगीत घरानों में कैद हो गया। इनका राष्ट्रीय चरित्र जातिय चरित्र में परिवर्तित हो गया इस प्रकार संगीत घरानों में प्रश्रय पाने लगा। घराना परम्परा इस समय में फैली सकीर्ण भावना का परिचायक है। घराना परम्परा से संगीत की सुरक्षा तो अवश्य हुई। संगीत का विकास भी हुआ पर जितना होना चाहिये था उतना दृष्टिगोचर नही होता। यद्यपि संगीत पूर्ण रूप से सुरक्षित रहा।

**समाजिक क्षेत्र में संगीत**

इस समय संगीतज्ञ, राजाओं और सामन्तों के आश्रय में चले गये और इसका प्रयोग आश्रयदाताओं को प्रसन्न करने के लिये किया जाने लगा और संगीत ने एक प्रकार से सामन्तशाही संगीत का रूप ले लिया। दूसरे संगीत में श्रंगारिकता का प्रभाव बढ़ने लगा। राजपूत राजा या तो युद्ध में लिप्त रहते थे या फिर शान्ति के समय में संगीत और साहित्य की उन्नति में अपना ध्यान लगाते थे ऐसी परिस्थिति में स्वान्त सुखाय संगीत का प्रचलन कम हो गया और संगीत का आत्मिक सौन्दर्य प्रभावित हुआ। सामान्य जनता इस सामन्त शाही संगीत को पसन्द नही करती थी इससे संगीत के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ। जनसाधारण ने अपने लिये एक अलग प्रकार के संगीत का निर्माण किया जनता में लोक संगीत विघमान था। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में लोक संगी दृष्टिगोचर होता [1]है। उनकी रोजमर्रा की जिन्दगी में काम करते समय, पनघट से पानी भरते समय इत्यादि अनेकों कार्य करते समय संगीत मय वातावरण रहता था। इस प्रकार जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में लोक संगीत दृष्टिगोचर होता है। इस प्रकार राजा प्रजा दोनों में संगीत पूर्ण रूप में व्याप्त था।

## संदर्भ

1. भारतीय संगीत का इतिहास धर्मावती श्रीवास्तव पृ0 167
2. भारतीय संगीत का इतिहास उमेश जोशी पृ0 188
3. चौलुक्य कुमार पाल – लक्ष्मी शंकर व्यास 1962 पृ0 276